स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की रुपरेखा

"जयश्री रॉय के कथा साहित्य का अनुशीलन"

शोध-छात्र

आनंत कल्याणराव पाटील

एम.ए. (हिंदी), एम.एड.

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.शिवहार भुजंगराव साळुंके

एम.ए., एम.एड. (हिंदी), सेट, नेट, जे.आर.एफ., पीएच.डी.

हिंदी विभाग

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,

उदगीर जिला लातूर

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर

सितम्बर, 2023

जयश्री रॉय के कथा साहित्य का अनुशीलन

प्रस्तावना :

मानवीय जीवन में साहित्य अभिव्यक्ति एवं भावों को व्यक्त करने का प्रभावशाली माध्यम है। इसलिए साहित्य ने सभी गलत विचारधाराओं को लाँघकर अपना व्यापक क्षेत्र बनाया है। साहित्य भूतकालीन, वर्तमान पात्रों के साथ-साथ भविष्य के आदर्श चरित्र सृष्टी के अनुशील का भी दायित्व उसने जिम्मेदारी के साथ निभाया है क्योंकि समाज, राज्य, देश आदि शब्दबद्ध अंकन किया है। इसलिए साहित्य अपने युग का दर्पण रहा है। हिंदी साहित्य ने अनेक मौलिक चरित्रों का निर्माण किया है। तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अपना दायित्व निभाया है। राम, कृष्ण, रत्नसेन, पद्मिनी, यशोधरा, कर्ण, होरी आदि न जाने कितने चरित्र हमारे सामने प्रस्तुत किए हैं। वर्तमान समय में भी हिंदी साहित्य चर्चा का विषय बना हुआ हे। इन लेखिकाओं के द्वारा प्रस्तुत चरित्र विशेष भी इसीलिए मुझे नारी लेखिकाओं के द्वारा कथा साहित्य का अनुशीलन में रुचि का विषय रहा है। इस कारण मैंने प्रस्तुत विषय का चयन किया है।

जयश्री रॉय आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की लोकप्रिय लेखिका है। उनके उपन्यास और कहानियों में विशेष है। उनके साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह हे की समाज, नारी, समस्या, आदर्शवत नीतियाँ, वास्तविक घटना प्रस्तुत की है। जयश्री रॉय के कहानियाँ एवं उपन्यासों में वर्तमान मानवीय मन और बुद्धि के प्रतिनिधि चरित्र है। वह वैश्विक स्त्री और पुरुषों के प्रतिनिधि एक चरित्र संपन्न व्यक्ति बन जाते है। जयश्री रॉय जी की 'औरत भी नदी है', 'साथ चलते हुए', 'इकबाल', 'दर्दजा' में अनेक चरित्रगत विशेषताएँ दिखाई देती है। इसी के साथ बहुत

सी कहानियों में समाज का अलग-अलग रूप, घटना, प्रसंग आदि का वर्णन किया हे। इसीलिए मैंने "जयश्री रॉय के कथा साहित्य का अनुशीलन" यह विषय चुना है।

विषय चयन की प्रेरणा:

छात्र जीवन से ही मुझे कथा साहित्य में रुचि रही है। जयश्री राय ने उपन्यास, कहानी, कथा, कविता आदि विधाओं में लेखन किया है। उनके 'औरत जो नदी है', 'साथ चलते हुए इकबाल', 'तुम्हें छू लूँ जरा', 'खारा पानी', 'तुम्हारे लिए' आदि साहित्य को मैंने पढ़ा। उनके साहित्य को पढ़ने के बाद मुझे इस पर अनुसंधान करने की इच्छा हुई। इस विषय को लेकर मैं मेरे मार्गदर्शक डॉ.शिवहार साळुंखे के साथ इस विषय पर गहन चर्चा कर मुझे उनके साहित्य का अनुशीलन करने का सुझाव दिया। इसलिए मैंने इस विषय का चयन किया है।

आंतरविद्याशाखीय संबंध

प्रस्तुत विषय साहित्य के साथ ज्ञान की अन्य शाखाओं के साथ भी अन्य रूप से जुड़ा हुआ है। वर्तमान साहित्य में यह विषय अहम भूमिका में दिख रहा है। साहित्य के साथ यह विषय कथा साहित्य से भी जुड़ा हुआ है। जिनमें सामाजिक सिथति का अध्ययन किया जा रहा है। इतिहास में नारी चेतना का उल्लेख दिखाई देता है। अत: इसी ऐतिहासिक संदर्भ में उनकी स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है। जयश्री रॉय के कथा साहित्य में अनेक समस्याओं को दर्शाया गया है जिसके लिए नारी चेतना के लिए अनुशीलन में जागरुकता लाना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रसारित करना अत्यंत आवश्यक है। अत: स्पष्ट है कि आंतरविद्याशाखीय अध्ययन के दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन, संशोधन कार्य विशिष्ट महत्त्व रखता है।

विषय की व्यापकता :

विस्तार एवं दृष्टिकोण की दृष्टि से यह विषय अत्यंत व्यापक है। साधारणत: जयश्री रॉय के साहित्य में सभी धर्म, जाति, भाषा, शहरी जीवन, ग्रामीण जीवन को

गंभीरतापूर्वक देखा जा सकता है। जयश्री रॉय के कायांतर,, दौंड, पिंजरा आदि कहानी संग्रहों में कथा साहित्य का अनुशीलन बहुत विस्तृत एण्वं गहन रूप से मिलता है। औरत जो नदी है, साथ चलते हुए, इकबाल आदि उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन एवं दृष्टिकोण कैसे बदल जाता है यह व्यापकता से दिखाई देता है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1) जयश्री रॉय जी की कहानी के माध्यम से समाज एवं समस्याओं का अध्ययन करना।

2) जयश्री रॉय जी के उपन्यास के माध्यम से लोगों की वास्तविक स्थिति को दर्शाना।

3) जयश्री रॉय जी के कथा साहित्य का विशेष रूप से अध्ययन करना।

4) अन्याय, पीड़ा, शोषण आदी समस्याओं को दर्शाना और उस पर सुझाव देना।

5) जयश्री रॉय जी के कथा साहित्य का अध्ययन कर उनके चिंतन पक्ष को उजागर करना।

6) आधुनिक हिंदी साहित्य में जयश्री रॉय का स्थान एवं महत्व दर्शाना।

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत अनुसंधान में वर्णनात्मक और आलोचनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा।

शोध कार्य का प्रारूप

अनुसंधान की दृष्टि से शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया जायेगा।

प्रथम अध्याय : जयश्री रॉय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्‍वितीय अध्याय : बीसवी शती के हिंदी साहित्य में जयश्री रॉय का स्थान

तृतीय अध्याय : जयश्री रॉय के उपन्यासों का अनुशीलन

चतुर्थ अध्याय : जयश्री रॉय की कहानियों का अनुशीलन

पंचम अध्याय : जयश्री रॉय के कथा साहित्य में चित्रित समस्याएँ एवं शिल्प विधान

षष्ठम अध्याय : निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

प्रथम अध्याय : जयश्री रॉय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में जयश्री रॉय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। जयश्री रॉय के व्यक्तित्व में उनका जन्म, जन्मस्थान, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, नोकरी-व्यवसाय तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाएगा। कृतित्व में उनके कहानी संग्रह, उपन्यास तथा कविताओं का परिचयात्मक अध्ययन किया जाएगा। उनके उपन्यास तथा कहानियों का तत्वगत अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत का काव्यसंग्रह का परिचय भी दिया जाएगा। उनके साहित्य की समग्र विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाएगा।

द्वितीय अध्याय : बीसवी शती के हिंदी साहित्य में जयश्री रॉय का स्थान

आधुनिक हिंदी साहित्य में जयश्री रॉय एक जाना-पहचाना नाम है। क्योंकि लेखिका की बीसवीं शती में युवा कथा सम्मान, स्पंदन कृति सम्मान, हंस कथा सम्मान, अन्य सम्मान एवं पुरस्कार मिल चुके हैं। देश भर के कई विश्वविद्यालयों में शोधार्थी उनके लेखन पर पीएच.डी. कर रहे है। उनकी कहानियों में स्त्री की अलगता, आपका सरोकार एवं पर्यावरण संबंधी विचार भी बेहद प्रशंसनीय हे। उपन्यासों में उनका अलग एवं गहरा प्रभाव आज रहा है।

तृतीय अध्याय : जयश्री रॉय के उपन्यासों का अनुशीलन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जयश्री रॉय के उपन्यासों का अध्ययन किया जाएगा। जयश्री रॉय ने अब तक तीन महत्त्वपूर्ण उपन्यास का लेखन किया है। उनके

तीनों उपन्यास 'औरत जो नदी है', 'साथ चलते हुए' और 'इकबाल' का तत्वगत अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा। इन उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर विश्लेषण-विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित नारी चेतना तथा वर्तमान आधुनिक संदर्भों का अध्ययन करते हुए सामाजिक समस्याओं का भी इस अध्याय में विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तुत उपन्यासों में चित्रित विभिन्न सामाजिक आयामों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाएगा। उपन्यासों में समाज का विस्तृत चित्रण किया गया है उसका समग्र अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : जयश्री रॉय की कहानियों का अनुशीलन

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत जयश्री रॉय द्वारा लिखित कहानियों का अनुशीलन कर अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। जयश्री रॉय के अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जयश्री रॉय की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं तथा परिस्थितियों का अनुशीलन इस अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा। कहानी में समाज के किसी एक अंग, घटना या संवेदना का चित्रण किया जाता है। सामाजिक संवेदना के चित्रांकन के दृष्टिकोण से कहानी एक महत्वपूर्ण विधा है। जयश्री रॉय की कहानियों में चित्रित इस सामाजिक संवेदना का इस अध्याय में विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। उनकी कविताओं में चित्रित समाज की अक्सवादिता, स्वार्थपरकता, मध्य एवं निम्नवर्गीय समाज की स्थिति-गति, महानगरीय सभ्यता आदि का कथा साहित्य के माध्यम से अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

पंचम अध्याय : जयश्री रॉय के कथा साहित्य में चित्रित समस्याएँ एवं शिल्प विधान

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जयश्री रॉय के 'तुम्हें छू लूँ जरा', 'कथांतर', 'फूरा के आँसू और पिगला हुआ इंद्रधनुष्य', 'खारा पानी', 'मोहे रंग लाल', आदि कथा संग्रहों में चित्रित नारी समस्या, पर्यावरण समस्या, आदिवासी जनजीवन की समस्या, नक्सलवाद, प्रौढ व्यक्ति की समस्या, ब्रेस्ट कैंसर की समस्या, सुन्नत करने की प्रथा आदि समस्याएँ का अध्ययन किया जाएगा।।

षष्ठम अध्याय : निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

षष्ठम अध्याय के अंतर्गत उपरोक्त सभी अध्यायों में विश्लेषित अध्ययन का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा। इस अध्याय के अंतर्गत अंतिम निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किए जायेंगे। शोध के निष्कर्ष बिंदूओं को इस अध्याय में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

संदर्भ

अ. आधार ग्रंथ

1) औरत जो नदी है (उपन्यास) - जयश्री रॉय

2) साथ चलते हुए (उपन्यास) - जयश्री रॉय

3) इकबाल (उपन्यास) - जयश्री रॉय

4) दर्दजा (उपन्यास) - जयश्री रॉय

5) थोड़ी जमीन, थोड़ा आसमान (उपन्यास) - जयश्री रॉय

ब. आधार ग्रंथ

1) अनकही (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

2) तुम्हें छू लूँ जरा (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

3) कायांतर (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

4) फूरा के आँसू और पिगला हुआ इंद्रधनुष्य (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

5) खारा पानी (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

6) मोहे रंग लाल (कथा संग्रह) - जयश्री रॉय

7) समाजशास्त्रीय विचार-मुज्तबा हुसैन

8) हंस पत्रिका, आलोचना

9) साहित्य के समाजशास्त्री की भूमिका-मैनेजर पांडे

10) समाजशास्त्र के सिद्धांत-विद्याभूषण, डी.आर. सचदेव

11) उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष-हरिकृष्ण रावत

12) प्रारंभिक समाजशास्त्र-डॉ.धर्मवीर महाजन

शोध-छात्र

अनंत कल्याणराव पाटील

एम.ए. (हिंदी), एम.एड.

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.शिवहार भुजंगराव साळुंके

हिंदी विभागप्रमुख

कै.बापूसाहेब पाटील एकंबेकर

महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर